Swami Swatantranand Memorial College, Dinanagar

A Multi Faculty, Post Graduate Co-Educational Institution

(Accredited with 'A' Grade by NAAC /Affiliated to Guru Nanak Dev University, Amritsar)

Report On

Webinar on 'Gyannidhi Vedic Sahitya: Vertman Sandharb Me'

On

6th April 2021

Organized by:

Department of Sanskrit

2020-21

Website: www.ssmdinanagar.org

Email: ssmdnn@yahoo.com

Webinar on 'Gyannidhi Vedic Sahitya: Vertman Sandharb Me'

(Research Methodology)

Resource Person

- **Dr. Dalbir Singh** (Head, Department of Languages & Sanskrit, GNDU, Amritsar)
- **Dr. Vishal Bhardwaj (**Department of Sanskrit, GNDU, Amritsar)

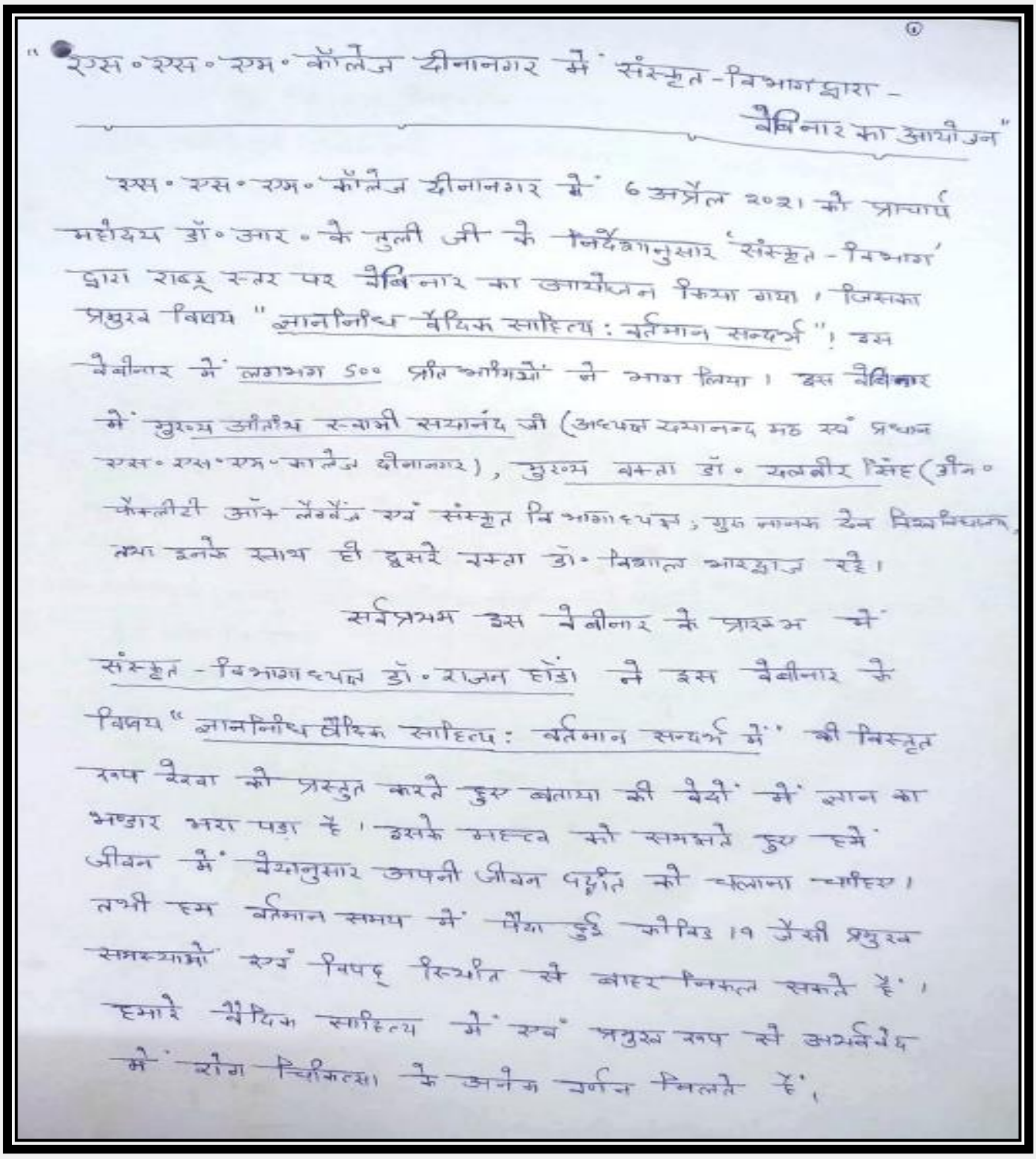

"एस॰एस॰एम॰ कॉलेज दीनानगर में संस्कृत-विभाग द्वारा - वैबिनार का आयोजन"

एस॰ एस॰ एम॰ कॉलेज दीनानगर में 6 अप्रैल 2021 को प्राचार्य महोदय डॉ॰ आर॰ के तुली जी के निर्देशानुसार 'संस्कृत-विभाग' द्वारा राष्ट्र स्तर पर वैबिनार का आयोजन किया गया। जिसका प्रमुख विषय "ज्ञाननिधि वैदिक साहित्य : वर्तमान सन्दर्भ"! इस वैबीनार में लगभग 500 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस वैबिनार में मुख्य अतिथि स्वामी सदानंद जी (अध्यक्ष दयानन्द मठ एवं प्रधान एस॰एस॰एम॰ कालेज दीनानगर), मुख्य वक्ता डॉ॰ दलबीर सिंह (डीन॰ फैकल्टी ऑफ लैंग्वेज एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष; गुरु नानक देव विश्वविद्यालय), तथा इनके साथ ही दूसरे वक्ता डॉ॰ विशाल भारद्वाज रहे।

सर्वप्रथम इस वैबीनार के प्रारम्भ में संस्कृत-विभागाध्यक्षा डॉ॰ राजन हांडा ने इस वैबीनार के विषय "ज्ञाननिधि वैदिक साहित्य: वर्तमान सन्दर्भ में" की विस्तृत रूप रेखा को प्रस्तुत करते हुए बताया की वेदों में ज्ञान का भण्डार भरा पड़ा है। इसके महत्त्व को समझते हुए हमें जीवन में वेदानुसार अपनी जीवन पद्धति को चलाना चाहिए। तभी हम वर्तमान समय में पैदा हुई कोविड 19 जैसी प्रमुख समस्याओं एवं विपद् स्थिति से बाहर निकल सकते हैं। हमारे वैदिक साहित्य में एवं प्रमुख रूप से अथर्ववेद में रोग चिकित्सा के अनेक वर्णन मिलते हैं।

आयुर्वेद में विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों जैसे मानुष्य, दैवी, आंगिरसी, आथर्वणी, जल चिकित्सा एवं मंत्र चिकित्सा का वर्णन मिलता है। हमें अपने जीवन को वैदिक पद्धति के अनुसार चलाना चाहिए। तभी हम अपने जीवन को सुचारु रूप से चला सकते हैं; तथा समाज एवं राष्ट्र को उन्नत बना सकते हैं।

सर्वप्रथम प्राचार्य महोदय डॉ० आर० के० तुली जी ने वेबिनार के साथ जुड़े मुख्य अतिथि: स्वामी सदानंद जी, मुख्य वक्ता डॉ० दलबीर सिंह, दूसरे वक्ता: डॉ विशाल भारद्वाज, एवं समस्त प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारा वैदिक साहित्य वर्तमान परिवेश में ज्ञान राशि से भरा पड़ा है। संस्कृत-भाषा की प्राचीनता एवं उसके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें वेदों के अन्दर एवं वैदिक साहित्य में भरी पड़ी ज्ञान राशि के मूल्य को पहचानते हुए हमें अपने जीवन को स्वस्थ एवं सुचारु रूप से चलाना चाहिए वर्तमान परिवेश में हमें वैदिक विचारधारा एवं वेदों की ओर लौटने की आवश्यकता है। तभी हम द्वन्द्वात्मक एवं विपद् स्थिति से बाहर निकल सकते हैं। तथा हम वैदिक विचारधारा पर चलते हुए अपने जीवन को सार्थक एवं स्वस्थ बनाएँ।

स्वागतीय सत्र के पश्चात् मुख्य अतिथि स्वामी सत्यानंद जी ने वेबिनार के प्रमुख विषय ज्ञाननिधि वैदिक साहित्य एवं अथर्ववेद में रोगोपचार पद्धति पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि अथर्ववेद में एवं सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में विशेष रूप से रोगोपचारक मन्त्र हैं। स्वामी सत्यानन्द जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि हमारी दैनिक दिनचर्या के सही न होने से तथा खान-पान व्यवस्था के ठीक न रहने से हम अनेक प्रकार की बिमारीयों से ग्रसित हो जाते हैं। जो मनुष्य ऋतभोगी, मितभोगी तथा हित भोगी होता है वह कभी भी अस्वस्थ नहीं रहता है। सभी रोग उससे दूर रहते हैं। अथर्ववेद और आयुर्वेद के सम्बन्ध को बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि आयुर्वेद जीवन शास्त्र है। चरक संहिता में कहा गया है कि आयुर्वेद वह शास्त्र है जिसमें पुरुष का जीवन अर्थात् आयु शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार से मुक्त रहता है। स्वामी जी ने अथर्ववेद के मन्त्रों में अनेक प्रकार के रोगों के उपचार की विधि को बताते हुए कहा कि आयुर्वेद में प्रतिपादित विधियां रोगों के उपचार की सर्वोत्तम विधियां हैं। हमें जीवन में रोगों से मुक्त होने के लिए देसी दवा का विशेष रूप से प्रयोग करना चाहिए। आयुर्वेद के नुस्खों को अपनाना चाहिए, ताकि हम जीवन में रोगमुक्त होकर स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकें।

~~स्वामी~~

स्वामी सत्यानंद जी ने अपने गुरुवर सर्वानंद जी के जीवन पर और दयानंद मठ औषधालय में उनके द्वारा किए गए सेवा कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका सारा जीवन मानव जाति की सेवा में व्यतीत हुआ तथा उन्होंने अपना समग्र जीवन वेदानुसार चलाते हुए मानव जाति की भलाई तथा लोगों की सेवा एवं उनके रोगों को दूर करने में लगाया। अपने वक्तव्य में स्वामी जी ने कहा कि हमें वेदमन्त्रों के रहस्यों को समझना चाहिए ताकि हम स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर अपना जीवन सुखद रूप से चला सकें।

इस वैबिनार के प्रथम मुख्य वक्ता डॉ० बलबीर सिंह जी ने अपने मुख्य विषय 'अथर्ववेद में रोगोपचारक मन्त्र' पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस वर्तमान परिवेश में 'वैदिक साहित्य' के ज्ञान की एवं 'अथर्ववेद' की विशेष रूप से प्रासङ्गिकता सिद्ध होती है। वेद ईश्वरीय वाणी है जो मानव जाति के कल्याण के लिए प्रमुख स्थान रखती है। चारों वेदों में कल्याण परक मन्त्र हैं। ऋग्वेद में आदर्श मानव, आदर्श समाज, आदर्श राष्ट्र के निर्माण-युक्त मन्त्र हैं। वेदों में 'अथर्ववेद' का औषधीय-ग्रन्थ के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। जिसमें अनेक रोगों के कारण एवं उनके उपचार के लिए सार्थक-मन्त्र समावेशित हैं। 'अथर्ववेद' औषधीय ग्रन्थ एवं रोगोपचारक मन्त्रों के समावेश से स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रमुख स्थान रखता है। अथर्ववेद में परिवार, समाज, राष्ट्र, पशु, कृषि आदि से सम्बन्धित अनेक समस्याओं के कारण एवं समाधान परक मन्त्र हैं। जिनके अनुसार चलने से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है। वेद मन्त्रों के अन्दर एक विशेष शक्ति है जिनके उच्चारण मात्र से वातावरण शुद्ध, समस्याओं से मुक्ति एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

मुख्य वक्ता डॉ० बलबीर सिंह ने अथर्ववेद के मन्त्रों के अनेक उदाहरण देकर अपने सारगर्भित व्याख्यान को विराम दिया।।

इस वेबिनार के द्वितीय वक्ता: डॉ० विशाल भारद्वाज ने अपने विषय "वैदिक विचारधारा की वर्तमान परिवेश में प्रासंगिकता" पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैदिक चिन्तन एवं वेदों के अन्दर प्रतिपादित विचारधारा के अनुसार ही आज हम सुरक्षित एवं स्वस्थ हैं। वेदों से बढ़कर कोई भी शास्त्र नहीं है। वेदों में राजा और प्रजा के परस्पर समन्वय भाव एवं एक साथ चलने के अनेक मन्त्र हैं। इनके एक साथ चलने से ही स्वस्थ, सुराष्ट्र एवं भव्य समाज का निर्माण हो सकता है! आज इस वर्तमान द्वन्द्वात्मक एवं संकटमय स्थिति से बाहर निकलने का एक मात्र उपाय है कि हम अपने जीवन को वैदिक विचारधारा के साथ जोड़ें तथा एक साथ मिलकर इस दुविधा-जनक स्थिति से बाहर निकलें। वेदों में जीवन से जुड़े अनेक मन्त्र हैं। वैदिक विचारधारा का मुख्य सन्देश है कि हम एक साथ मिलकर चलें, उठें, जागें तथा श्रेष्ठ पुरुषों को प्राप्त करके ज्ञान प्राप्त करें। मृत्यु से अमरता की ओर चलें, किसी से भी द्वेष न करें, शरीर धर्म का मुख्य साधन है; इसको स्वस्थ रखें, मानसिक और शारीरिक शक्ति का संचय करें, हमारी संस्कृति एवं वैदिक विचारधारा का प्रमुख सन्देश है, 'पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव', को अपने अन्दर समाहित करते हुए तथा अपने जीवन को सार्थक बनाते हुए सुराष्ट्र एवं भव्य-स्वस्थ समाज का निर्माण करें।

इस वेबिनार के अन्त में अनेक प्रतिभागियों के प्रश्नों का मुख्य वक्ता द्वारा समाधान किया गया। अन्त में इस वेबिनार की कार्यक्रम शृंखला को विराम देते हुए आभार हुए मुख्य अतिथि, मुख्य वक्ता एवं सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए 'शान्तिपाठ' द्वारा वेबिनार का समापन किया गया।

Attendance Link
https://ssmdinanagar.org/pdf/Vedic_Sahitya_Webinar_Responses.xlsx

Webinar Highlights

News Report

ज्ञान निधि वैदिक साहित्य वर्तमान संदर्भ में वैबीनार करवाया

दीनानगर (राजीव, राजकुमार): एस.एस.एम. कालेज में प्रिंसीपल डा. आर.के. तुली की अध्यक्षता में संस्कृत विभाग द्वारा ज्ञान निधि वैदिक साहित्य वर्तमान संदर्भ में विषय पर वैबीनार करवाया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रुप में दयानंद मठ दीनानगर के प्रधान स्वामी सदानंद उपस्थित हुए जबकि डा. दलबीर सिंह डीन भाषा संकाय संस्कृत विभागाध्यक्ष जी.एन.डी.यू. अमृतसर डा. विशाल भारद्वाज संस्कृत विभाग जी.एन.डी.यू. अमृतसर बतौर संसाधन व्यक्ति शामिल हुए। प्रिंसीपल तुली ने कहाकि संस्कृत विश्व की सभी भाषाओं में सर्वोत्तम स्थान की अधिकारी है। प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों की भाषा रही है। संयोजक तथा विभाग अध्यक्ष डा. राजन ने वैबीनार की रूपरेखा तैयार करते हुए कहाकि आयुर्वेद जीवन शास्त्र है जिसमें मनुष्य का जीवन अर्थात आयु शारीरिक, मानसिक दोनों प्रकार के रोगों से मुक्त रहती है। स्वामी सदानंद ने कहा कि आयुर्वेद विज्ञान की वह शाखा है जिसका संबंध मानव के शरीर को निरोग रखने तथा आयु बढ़ाने से है। उन्होंने आयुर्वेद के जनक धनवंतरी का परिचय देते हुए आयुर्वेद के नियमों का पालन करने को कहा।

वैबीनार दौरान सम्बोधित करते प्रिंसीपल डा. तुली।

Swami Swatantranand Memorial College Dinanagar

Principal
SWAMI SWATANTRANAND MEMORIAL COLLEGE
Dinanagar (Gurdaspur)